

फ्रेदेरिको गार्शिया लोर्का की एक कविता

एक दमकता इस्पात जैसा ढला गीत
विचार से समृद्ध
पछतावे और पीड़ा से अम्लान
उड़ान भरे सपनों से बेदाग
एक गीत जो चीजों की आत्मा तक
पहुँचता हो, हवाओं की आत्मा तक
एक गीत जो अन्त में अनन्त हृदय के आनन्द में
विश्राम करता हो।

(स्पेन के महान क्रान्तिकारी कवि,
36 वर्ष की उम्र में जनरल फ्रांको की तानाशाही
के खिलाफ लड़ते हुए शहीद हुए।)

अराजनीतिक बुद्धिजीवी

● ओतो रेने कास्तिलो

एक दिन
हमारी जनता का
सबसे मामूली आदमी
इस देश के
अराजनीतिक
बुद्धिजीवियों से
जिरह करेगा
उनसे पूछा जाएगा
किस उन्होंने क्या किया
जब उनका देश नष्ट हो रहा था
एक शान्त चिन्ता की तरह
चुपचाप
छोटा और अकेला

कोई नहीं पूछेगा उनसे
उनकी पोशाक के बारे में
भोजन के बाद आराम की
लम्बी दोपहरों के बारे में
कोई जानना नहीं चाहेगा
“कुछ नहीं के दर्शन” से
उनकी बाँझ लड़ाइयों के बारे में
उनकी समृद्ध आर्थिक समझ पर
कोई ज़रा भी गौर नहीं करेगा
कुछ भी नहीं पूछा जाएगा उनसे
ग्रीक मिथकों के बारे में
अथवा उनकी आत्म-घृणा के सन्दर्भ में
जब उनमें से कोई
मरने लगेगा
कायरों की मौत
उनसे कुछ भी नहीं पूछा जाएगा
उनके वाहियात
स्पष्टीकरणों के बारे में
जो कि साफ़-साफ़ झूठ की
छाया में उपजे हैं
और उस दिन
सबसे मामूली लोग आएँगे
वे, जिनके लिए कहीं जगह नहीं है
अराजनीतिक बुद्धिजीवियों की
किताबों और कविताओं में
लेकिन जो रोज़ पहुँचाते रहे
उनके लिए तौर्तिलिया और अण्डे
वे, जिन्होंने उनके कपड़े रफू किए हैं
जिन्होंने उनकी गाड़ियाँ चलाई हैं
जिन्होंने उनके कुत्तों और बागीचों की
रखवाली की है
और उनका काम किया है।